国 n. aër, coelum. N. 12.53. (Cf. gr. χάος et lat. ha-lare.)

विकास 1. F. (हास) ridere. (Cf. क्रक्स, काल, क्राल् , क्रालं , क्

ল্লো (e ল্ল aër et আ iens) 1) in aëre iens, se movens. A. 10.61. 2) m. avis.

ख्याम m. (e ख et ग्राम iens) avis. N. 1. 24.

1. वच् ६. म. (भूतिपूत्योहत्पत्ती) felicem, potentem fieri; purum fieri.

2. विच् 10. म.: विच्यामि (ब्रन्धने) ligare, nectere, connectere, conserere. Schol. ad C'aur. 19.; Lass. 73. 13.

c. उत्id. RAGH. 13.54:: माला सितपङ्कतानाम् इन्दी-वरेत्र उत्ववितान्तरा (Schol. Calc. सहग्रियतमध्या): बचर (e ख aër et चर iens) in aëre iens. A.10.26.

वज 1. 4. (मन्थने K. मन्ये V.) commovere, agitare.

ল্রেন m. (r. ল্রনু s. স্প্রকা) instrumentum, quo lactis flos agitatur ad butyrum conficiendum, «churning stick». Hem.

1. P. (scribitur ভারু, gr. 110^a).) claudicare, c. sq. (Huc traxerim nostrum hinke, germ. med. hinke, cujus rad. et praet. sonat hanc, v. gr. comp.109^a).1); consonantes nituntur formâ লাভারু, mutatâ tenui in aspiratam et mediâ in tenuem, v. gr. comp. 87.)

ল্বেস্ক্র (r. ল্রেড্রে s. স্ম) claudus. BHAR. 1.63. (Germ. med. hanc.)

অস্কান্তল ক্ষ. (e ত্রেস্ক et ত্রিল iens, v. ত্রিল্) motacilla. ত্রস্কান ক্ষ. (r. ত্রেডরু s. স্কন) id. Am.

खरू 1. म. (काङ्क्ये म. काङ्कि म.) desiderare.

खरूर 10. P. (वृती) tegere; cf. खुडू, गुणर्.

खद्ञा f. (r. खदूदू, abjecto alterutro टू, s. ञ in fem.) lectus. HIT. 86.6.8.

विड् 10. म. खाउयामि findere, frangere, rumpere, dividere, divellere, laxare, v. sq. et cf. खुड, खाउ.

ञ्जू m. 1) rhinoceros. RAGH. 9.62. 2) rhinocerotis cornu. 3) ensis. N. 10.18.

खाउँ १. १.४. (scribitur खड़, gr. 110°).) 1) i. q. खड़. Hit. 64.10.: रजनीचयनाथेन खणिउते तिमिरेः 73. ७. स्त्रीभिः कस्य न खणिउतम् भुवि मनः; Ur. 12. १६.: खणिउताग्रात् ... मृणालात् . 2) deserere, relinquere. Ragh. 5.67.: म्रबला निशि खणिउताः (Cf. खुण्ड्, खुड्, खुर्. Lith. kándu mordeo.)

回以 m.n. (r. 回以 s. 另) pars, portio, sectio, fragmentum, frustum; tomus. HIT.111.10.27.15. A. 8.1. BHAR. 2.98. SA. 5.108. — 回以 南 in frusta dissecare, frangere. RAGH.16.51.

লেডের n. (r. লেডের s. সান) 1) actio frangendi, rumpendi, destruendi. Hit. 54.3.112.21. RAGH. 9.35. 2) perfidia. RAGH. 19.21.

1. विद् 1. P. occidere. Dev. 8.37.: पतितांस् तांश् चावा-दा थ सा तदा (Cf. कृथ्, त्ताथ्, lat. clades.)

2. विद् 10. मः खादयामि edere, vorare, de animalibus. N. 12. 35.: माङ् खादयः M. 7.: दुर्जलम् बलवन्ता हि मत्स्या मत्स्यम् ... खादयन्तिः ए खादः

ছাবিং m. nomen arboris, Wils. «Khayar or catechu, Mi-mosa catechu». N. 12. 4.

खन 1. P. fodere, perfodere. Hit. 30.1.: মম বিলাংছ ভানিলো; RAM. I. 32.52.: पृथिनी सर्वा खन्यते -Part. pass. ভানে, gr. 616.; Gerund. in य, ভান্য vel ভাষা; Pass. ভান্য vel ভাষা. (Gr. χαίνω, χανῶ, germ. vet. ginêm, ginêm hio, nostrum gähne, anglo-sax. cina rima, cinan hiare; lat. cuniculus, canalis; v. ভানি, ভানি.)

с. उत् effodere. Внак. 3. 5.: उत्वातन् निधिशङ्कया नि-